कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय सामाजिक विज्ञान

परीक्षा का दिन.....

दिनांक .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जावेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 159/2016

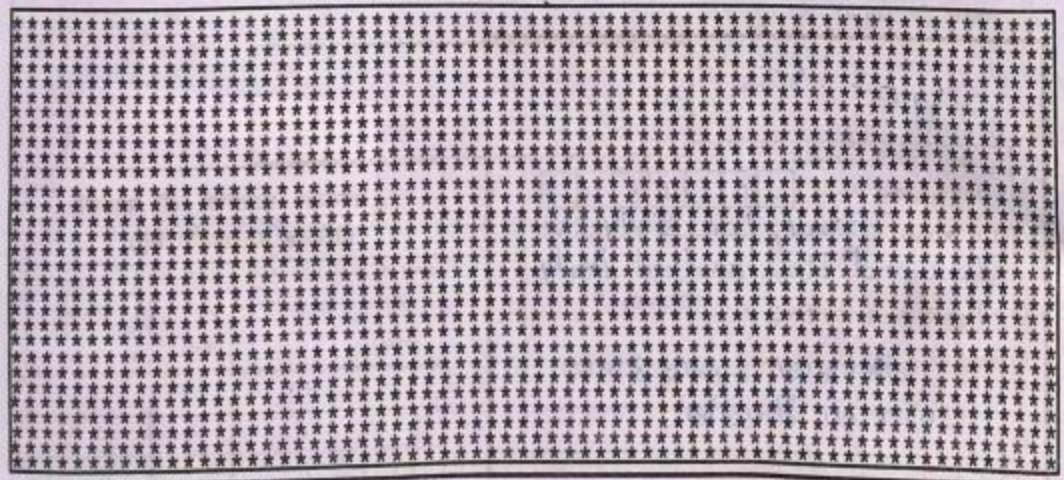

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाडें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1.	यह महात्मा गांधी ने कहा था।
2.	लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली में 'व्यक्ति की गरिमा' सर्वाधिक सुरक्षित रहती है क्योंकि लोकतंत्र शासन प्रणाली में व्यक्ति की गरिमा को सिद्धांत रूप में स्वीकार किया जाता है।
3.	प्रति व्यक्ति आय – राष्ट्रीय आय को कुल जनसंख्या से भाग देने पर प्राप्त आय को प्रतिव्यक्ति आय कहते है। प्रति व्यक्ति आय = राष्ट्रीय आय / कुल जनसंख्या
4.	मैदा, शक्कर
5.	बहुराष्ट्रीय कंपनियो द्वारा मूल देश को छोड़कर दूसरे देश में व्यापार करने की के लिए लागत लगाना निवेश कहलाता है अर्थात ~~बहुराष्ट्रीय~~ कंपनियो द्वारा दूसरे देश या स्वदेश में किया गया ~~निवेश~~ व्यय ही निवेश कहलाता है।
6.	उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम 1986 का दूसरा नाम 'कोपरा' (COPRA) है।
7.	पूना पैक्ट सितम्बर, 1932 मे महात्मा गांधी व

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

डॉ. भीमराव अंबेडकर के मध्य हुआ था।

8. सतत् पोषणीय विकास का तात्पर्य है कि विकास पर्यावरण को बिना नुकसान पहुंचाये हो तथा वर्तमान विकास की प्रक्रिया भावी पीढ़ियो की आवश्यकताओं की अवहेलना न करे।

(9.) काली मृदा की विशेषताएं-
1. काली मृदा में नमी धारण करने की क्षमता अत्यधिक होती है।
2. काली मृदा कपास की खेती के लिए उपयुक्त होती है इसलिए इसे 'काली कपास मृदा' भी कहा जाता है।

(10) संकटग्रस्त वन्य जीव प्रजातियां-
1. काला हिरण
2. मगरमच्छ व घड़ियाल

11. राजस्थान के अर्द्धशुष्क व शुष्क क्षेत्रो में वर्षा जल संग्रहण करने के लिए गड्ढे बनाये जाते है जिससे जल इन गड्ढो मे भर जाता था और शुष्क क्षेत्रो में इसका उपयोग किया जाता था। पश्चिमी क्षेत्रो में 'जोहड़' तथा अन्य क्षेत्रो में 'खादिन' के रूप में भी वर्षा जल एकत्रित किया जाता था। राजस्थान

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मे टांका भी सुविकसित जल संग्रहण तंत्र का अभिन्न हिस्सा होता था जिसे मुख्य घर अथवा आंगन मे बनाया जाता था। टांके मे छत का जल पाइपो के माध्यम से एकत्रित हो जाता था और बाद मे इस जल का उपयोग किया जाता था।

12. चावल की कृषि के लिए भौगोलिक दशाएँ -

1. मिट्टी - चावल की कृषि के लिए डेल्टाई मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है।

2. जलवायु - चावल की कृषि के लिए बोने से लेकर काटने तक 20 - 27°c तापमान की आवश्यकता होती है।

3. वर्षा - चावल की खेती के लिए अधिक वर्षा या आर्द्रता की आवश्यकता होती है। चावल का पौधा 60 - 90 दिनो तक पानी मे डूबा रहता है अतः इसके लिए पर्याप्त जल की आवश्यकता होती है।

4. श्रम - चावल की खेती मे अधिकतर कार्य जैसे निराई, कटाई आदि हाथ से करने पड़ते है अतः इसके लिए अधिक तथा सस्ते मानवीय श्रम की आवश्यकता होती है।

(13) विनिर्माण उद्योग को विकास तथा विशेष रूप से आर्थिक विकास की रीढ की हड्डी माना जाता है। विनिर्माण उद्योग का महत्व इस प्रकार है -

1. विनिर्माण उद्योग न केवल कृषि के आधुनिकीकरण मे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सहायक होते है अपितु द्वितीयक एवं तृतीयक सेवाओ मे रोजगार उपलब्ध करवाकर कृषि पर निर्भरता को कम करते है।

२. विनिर्माण उद्योग देश के आधुनिकीकरण मे सहायक होते है।

3. विश्व के वे ही देश विकसित है जो कच्चे माल को विनिर्माण के जरिये अन्य रूपो मे परिवर्तित करते है और उसका निर्यात करते है।

५. कृषि और विनिर्माण उद्योग का विकास भी साथ-साथ होता है। ये एक-दूसरे के पूरक होते है।

देश की आर्थिक प्रगति मे विनिर्माण उद्योग का महत्वपूर्ण योगदान है।

१५. सड़क परिवहन की उपयोगिता -

1. सड़क परिवहन, परिवहन का सस्ता साधन है। यह लोगो को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने मे कम लागत व्यय करवाता है।

२. सडके अधिक ढाल प्रवणता तथा पहाडी क्षेत्रो मे भी निर्मित की जा सकती है।

3. सडके रेल लाइनो की तुलना मे कम खर्चीली होती है और इनका निर्माण भी सुगमता से हो जाता है।

५. सड़के कम यात्री, कम दूरी तथा कम वस्तुओ के परिवहन मे सहायक होती है।

इस सरक प्रकार सड़के अन्य परिवहन साधनो की अपेक्षा बेहतर होती है व अधिक उपयोगी होती है।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

15. ब्रेटन वुड्स समझौता – अंतर्राष्ट्रीय विश्व मे आर्थिक स्थिरता व पूर्ण रोजगार प्राप्त करने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक सम्मेलन मे जुलाई 1945 मे अमेरिका में स्थित न्यू हैम्पशायर मे एक सम्मेलन आयोजित किया था जिसे ब्रेटन वुड्स सम्मेलन कहा जाता है। इस सम्मेलन मे युद्धोत्तर पुनर्निर्माण व धन की व्यवस्था करने के लिए विश्व बैंक की स्थापना की और युद्ध के खर्चो का निपटान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना की।

इस सम्मेलन में संपूर्ण विश्व मे उद्योग का विश्वव्यापी प्रसार हुआ। इससे विश्व व्यापार की विकास दर वार्षिक 8% से भी अधिक रही। इससे बेरोजगारी औसतन 5% से भी कम रही। पूर्ण रोजगार व धन उपलब्ध करवाने में सफलता प्राप्त की।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (I.M.F) व विश्व बैंक को ही ब्रेटन वुड्स समझौते की जुड़वां संतान कहा जाता है।

16. ब्रिटिश औद्योगीकरण के कारण भारतीय बुनकरो को निम्न समस्याओ का सामना करना पड़ा –

1. बुनकरो का निर्यात बाजार घट रहा था व स्थानीय बाजार सिकुड़ रहा था।
2. स्थानीय बाजार मे मैनचेस्टर के आयातित मालो की भरमार थी। मैनचेस्टर से आने वाले वस्त्र

सस्ते व सुंदर होते थे। भारतीय बुनकर इनका मुकाबला नहीं कर सकते थे और उनके उद्योग बंद पड़ गये थे।

3. अमेरिका मे गृहयुद्ध प्रारंभ होने पर बुनकरो के लिए कच्चा माल मिलना अत्यंत कठिन हो गया था।

5. भारत मे भी औद्योगीकरण का दौर शुरू हो गया था। बाजार मशीनो से बनी चीजो से भर गये थे। इससे बुनकरो के उत्पादो की मांग घट गई थी और बुनकर उद्योग पतनोन्मुख हो गया था।

5. ब्रिटिश उद्योगपतियो ने ईस्ट इण्डिया कंपनी पर दबाव डाला कि वह ब्रिटिश उत्पादो को भारतीय बाजारो में बेचे। इंग्लैंड से आने वाले उत्पाद सस्ते व सुंदर होते थे। भारतीय बुनकर इनसे प्रतिस्पर्धा नहीं कर सके।

अतः ब्रिटिश औद्योगीकरण में बुनकरो की दशा शोचनीय हो गई थी और उनकी आय भी बहुत कम रह गई थी। वे अपनी दैनिक आवश्यकताओ को पूरा करने में परेशानी महसूस करने लगे थे अर्थात् उनकी दशा बहुत ही दयनीय हो गई थी।

18. ब्रिटेन में राष्ट्रवाद का इतिहास कोई अचानक हुई उथल-पुथल या क्रांति का परिणाम नहीं था बल्कि यह लंबी चलने वाली प्रक्रिया का परिणाम था।

ब्रिटेन में राष्ट्रवाद का इतिहास शेष यूरोप से

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

निम्न प्रकार भिन्न था -

1. ब्रिटेन में अंग्रेज, वेल्स, स्कॉटिश, आयरिश आदि जातीय समूह थे जिनकी पहचान नृजातीय थी।

2. इन जातीय समूहों में अंग्रेजो की शक्ति, धन, संपत्ति की वृद्धि हुई तो वह द्वीप समूह के अन्य जातीय समूहो पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने मे सफल हुए।

3. सबसे पहले उन्होने स्कॉटिश लोगो पर नियंत्रण किया और उन्हे अपने देश मे सम्मिलित किया।

4. इसके बाद उन्होने आयरिश लोगो पर नियंत्रण किया और उन्हे बलपूर्वक ब्रितानी राज्य में सम्मिलित कर लिया।

इस प्रकार 'यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन' का 1707 में शांतिपूर्ण तरीके से गठन हुआ। जबकि अन्य यूरोपीय देशों जैसे - इटली, जर्मनी आदि के राष्ट्रवाद लम्बे संघर्ष के बाद स्थापित हुए थे।

इस प्रकार ब्रिटेन का राष्ट्रवाद अन्य यूरोपीय देशो की तुलना में भिन्न था।

19. (1.) सत्ता की साझेदारी के तीन रूप इस प्रकार है -

सत्ता का क्षैतिज वितरण - क्षैतिज वितरण के अंतर्गत शासन के विभिन्न अंगो जैसे विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच सत्ता का बंटवारा किया जाता है। इसमें प्रत्येक अंग स्वतंत्र होता है। प्रत्येक अंग दूसरे पर नियंत्रण रखने की शक्ति रखता है। इससे कोई भी अंग

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सत्ता का असीमित उपयोग नहीं कर सकता है। इससे नियंत्रण व संतुलन बना रहता है। इसलिए इसे नियंत्रण व संतुलन की व्यवस्था भी कहते है।

(2) सत्ता का ऊर्ध्वाधर वितरण — ऊर्ध्वाधर वितरण के अंतर्गत सरकार के स्तरों जैसे - राष्ट्र स्तर, राज्य स्तर व स्थानीय स्तर के बीच सत्ता का बंटवारा किया जाता है। इसमें उच्चतर व निम्नतर स्तर की सरकारें होती हैं। निम्न स्तर की सरकार उच्च स्तर की सरकार के अधीन कार्य करती है।
जैसे - भारत में राष्ट्र स्तर की सरकार को संघ सरकार कहते हैं तथा राज्य स्तर की सरकार को राज्य सरकार कहते हैं। राज्य सरकार केंद्र सरकार के नियंत्रण में कार्य करती है।

(3) विभिन्न समूहो के बीच सत्ता की साझेदारी — सत्ता की साझेदारी का अन्य रूप विभिन्न सामाजिक समूहो के बीच साझेदारी है। इसमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियो के लिए सीटे आरक्षित की गई है। इससे इन समूहो की सत्ता में भागीदारी संभव हो पाती है।

द्वारा क	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	२०	भारतीय लोकतंत्र के समक्ष तीन चुनौतियाँ इस प्रकार है -
	१.	लोकतंत्र के विस्तार की चुनौती - लोकतंत्र की विस्तार की चुनौती का तात्पर्य है कि लोकतांत्रिक सिद्धांतो को सभी क्षेत्रो व सभी सामाजिक समूहो मे लागू करना। इसमें स्थानीय सरकार को और अधिक सम्पन्न करना, संघ के सिद्धांतो को सभी क्षेत्रो मे लागू करना तथा महिलाओ का प्रतिनिधित्व बढ़ाने की चुनौतियां शामिल है।
	२.	लोकतंत्र को मजबूत करने की चुनौती - लोकतंत्र को मजबूत करने की चुनौती मे लोकतांत्रिक सिद्धांतो और व्यवहारो को मजबूत बनाना शामिल है। इसमें दलो मे आंतरिक लोकतंत्र स्थापित करना, दलो मे धन व बल की बढ़ती घुसपैठ व दलो मे वंशवाद को समाप्त करने की चुनौतियां शामिल है। इसमे लोकतंत्र को सुदृढ व श्रेष्ठ साबित करने के लिए प्रयास करने की चुनौती है।
	३.	लोकतंत्र को स्थापित करने की चुनौती - लोकतंत्र को स्थापित करने की चुनौती का तात्पर्य लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था को उन देशो मे स्थापित करना है जिनमे लोकतंत्र नही है। संसार के एक-चौथाई राष्ट्रो मे लोकतंत्र नही है अतः इन देशो मे लोकतंत्र को स्थापित करने की चुनौती है।

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

२१. आर्थिक विकास - आर्थिक विकास का अभिप्राय जीवन को पहले से बेहतर बनाना है। विकास के अंतर्गत जीवन से जुड़े विभिन्न लक्ष्य तथा उन्हें प्राप्त करने के उपायों के संबंध में अध्ययन करते है।

आर्थिक विकास के लक्ष्य -

1. आय में वृद्धि - आर्थिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य आय मे वृद्धि करना है। इसमे राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय दोनो को शामिल किया जाता है।
2. नियमित रोजगार एवं बेहतर मजदूरी - विकास का अन्य महत्वपूर्ण लक्ष्य है कि सभी लोगो को नियमित रोजगार उपलब्ध हो तथा उनकी मजदूरी भी अधिक हो जिससे कि वे अपने जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएं पूरी कर सके और बेहतर जीवन यापन कर सकें।
3. समानता व सुरक्षा - विकास का अन्य महत्वपूर्ण लक्ष्य है कि देश मे रहने वाले सभी लोगों के साथ समानता का व्यवहार किया जाये और उनके साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव न किया जाये। इसके साथ ही देश मे रहने वाले सभी लोग अपने आपको सुरक्षित समझे।

इनके अतिरिक्त विकास में शिक्षा व स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओ व सार्वजनिक सुविधाओ को विस्तार करने के लक्ष्य शामिल किये जाते है।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

23. भारत मे वैश्वीकरण का तात्पर्य है कि भारतीय अर्थव्यवस्था मे अन्य देशो का बिना अवरोध संचालन से है अर्थात भारत का अन्य देशो के साथ व्यापारिक संबंध व तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया वैश्वीकरण कहलाती है।

भारत पर वैश्वीकरण के निम्न प्रभाव पड़े है-

1. वैश्वीकरण से भारतीय उत्पादको व विक्रेताओ को लाभ हुआ है क्योंकि वैश्वीकरण से उन्हे अपने उत्पादो को विश्व स्तर पर बेचने का मौका मिला है और उनकी आय मे वृद्धि हुई है।

2. वैश्वीकरण से उपभोक्ताओ को लाभ हुआ है क्योंकि उन्हे अधिक गुणवत्ता वाली वस्तुएं कम कीमत पर प्राप्त हुई है। वैश्वीकरण से लोगो के सामने उत्पादो के अनेक विकल्प उपलब्ध हुये है और उन्हे चुनाव करने का पर्याप्त मौका मिला है।

3. वैश्वीकरण से नवीन तकनीकी व प्रौद्योगिकी का देश मे आगमन होता है और रोजगार के अवसरो मे वृद्धि हुई है परन्तु वैश्वीकरण से भारतीय लघु व कुटीर उद्योगो को हानि हुई है क्योंकि ये उद्योग वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं कर पाये और बंद हो जाते है। वैश्वीकरण से ये उद्योग पतनोन्मुख हो गये तथा वृहत उद्योग और अधिक उत्पादन करने मे सफल हुए।

वैश्वीकरण का भारत मे प्रभाव सभी वर्गों पर समान नही पड़ा है क्योंकि कुछ लोगो को इससे लाभ हुआ है और कुछ को हानि।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

२५. बाजार मे उपभोक्ता का शोषण अनेक प्रकार से किया जाता है जिनमे मुख्य कारक निम्न है-

1. बाजार मे उपभोक्ता को मिलावटी वस्तुएं दी जाती है तथा उससे अधिक कीमत लेकर भी उसका शोषण किया जाता है।

2. वस्तुओ की अपर्याप्त पूर्ति होने पर दुकानदार कालाबाजारी, जमाखोरी, भ्रष्टाचार का सहारा लेकर वस्तुओ की बाजार मे कमी कर देते है और फिर वस्तुओ को निर्धारित मूल्य से अधिक मूल्य पर बेचकर लाभ अर्जित करते है।

3. उपभोक्ता को घटिया किस्म की वस्तु देकर भी उसका शोषण किया जाता है तथा उपभोक्ता को वस्तु के विकल्पो की पर्याप्त जानकारी न देकर भी उसका शोषण किया जाता है। उपभोक्ता को वस्तु के अन्य विकल्पो की जानकारी नही दी जाती है।

विक्रेता द्वारा कम तोलकर भी उपभोक्ता का शोषण किया जाता है।

२६. मुद्रण संस्कृति ने भारत मे राष्ट्रवाद के विकास मे निम्न प्रकार से सहायता की -

1. स्वतंत्रता आंदोलन के कारण दौरान समाचार पत्र-पत्रिकाओ व अखबारो के माध्यम से लोगो में राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत की गई थी उन्हे ब्रिटिश सरकार का विरोध करने के लिए प्रेरित किया गया था।

द्वारा क	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	२.	पुस्तको के माध्यम से लोगो मे संघर्ष के भाव भरे गये और उन्हे भारतीयो की दुर्दशा से अवगत कराया गया और विद्रोह के लिए प्रेरित किया गया। 'आनन्द मठ' और 'हिन्द स्वराज' जैसी पुस्तको ने लोगो मे विद्रोह का सुर भर दिया और उन्हे देश के प्रति सजग बनाया।
	३.	पुस्तको के माध्यम ज्ञान का प्रचार - प्रसार किया गया और लोगो को शिक्षित करके उन्हे संघर्ष के लिए प्रेरित किया पुस्तको अर्थात् मुद्रण क्रांति से लोगो मे नवचेतना उत्पन्न हुई और उनके अंदर विद्रोह के स्वर भर उठे और इन्होने देश को स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष किया।
	२८.	परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत -
	1.	कोयला 2. पेट्रोलियम
	3.	प्राकृतिक गैस 4. जल विद्युत।
		कोयला - कोयले के निर्माण लाखो, करोड़ो वर्षो मे पृथ्वी तल के अंदर दबे पेड़-पौधो व जंतुओं के विघटन से होता है। इसलिए इसे जीवाश्म ईंधन भी कहा जाता है। सम्पीडन की मात्रा व समय के आधार के पर कोयला चार प्रकार का होता है -
	1.	पीट - यह नमी युक्त कोयला होता है। इसमें नमी की मात्रा अधिक तथा कार्बन की मात्रा कम होती है।

अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

२. लिग्नाइट - यह घटिया किस्म का भूरा कोयला होता है। इसमे नमी की मात्रा अधिक होती है। यह राजस्थान मे अजमेर क्षेत्र व तमिलनाडु के नैवेली क्षेत्र मे मिलता है। यह विद्युत उत्पादन हेतु उपयोग किया जाता है।

३. बिटुमिनस - यह उच्च श्रेणी का कोयला होता है इसमे कार्बन की मात्रा अधिक होती है व नमी की मात्रा कम होती है। यह व्यापारिक उपयोग हेतु सर्वाधिक उपयोग मे आने वाला कोयला है। अधिकांश उद्योगो मे इसी कोयले का प्रयोग किया जाता है।

४. एंथ्रेसाइट - यह सर्वोत्तम किस्म का कोयला होता है। इसमे कार्बन की क्षमता सर्वाधिक होती है। और इसका ताप भी उच्च होता है।

कोयले का वितरण - भारत मे कोयला मुख्य रूप से दो क्षेत्रो मे पाया जाता है-

1. गोंडवाना क्षेत्र - इस क्षेत्र मे २०० लाख वर्ष से अधिक आयु के कोयले के जमाव पाये जाते है। इस क्षेत्र का कोयला धातु शोधन कोयला है। देश मे इसके भंडार पश्चिमी बंगाल और झारखंड मे पाये जाते है। इस क्षेत्र मे देश का 98% कोयला प्राप्त होते है।

२. टरशियरी क्षेत्र - इस क्षेत्र मे 55 वर्ष पुराने कोयले

परीक्षार्थी उत्तर

के जमाव पाये गये है। यह कोयला उत्तर पूर्वी राज्यो मे पाया जाता है। इस क्षेत्र से देश का 2% कोयला प्राप्त होता है।

27. भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। यह हम निम्न आधारो पर कह सकते है -

1. कोई धर्म राजधर्म नहीं - भारतीय संविधान में किसी भी धर्म को राजधर्म के रूप मे अंगीकार नहीं किया गया है। इंग्लैंड मे ईसाई धर्म, श्रीलंका मे बौद्ध धर्म तथा पाकिस्तान मे इस्लाम धर्म का जो दर्जा रहा है उसके विपरीत भारत में किसी भी धर्म को यह दर्जा नहीं दिया गया है।

2. कोई भी धर्म अपनाने की स्वतंत्रता - भारतीय संविधान मे किसी भी धर्म को अपनाने की स्वतंत्रता प्रदान की गई है। भारत का प्रत्येक नागरिक अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म को मानने तथा उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए स्वतंत्र है। वह बाध्य नहीं है। वह स्वेच्छा से किसी भी धर्म को स्वीकार कर सकता है।

3. धार्मिक भेदभाव का निषेध - भारत मे धार्मिक भेदभाव का निषेध किया गया है। किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता। भारत सरकार ने ऐसा करने वाले लोगो पर कठोर दंड का प्रावधान भी किया है।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

५. शासन के हस्तक्षेप की इजाजत - भारतीय संविधान धार्मिक भेदभाव से संबंधी मामले मे शासन के हस्तक्षेप की इजाजत देता है। जैसे - छुआछूत से संबंधित मामले मे सरकार को हस्तक्षेप करने की इजाजत देता है।

२८. राजनीतिक दलो मे सुधार के उपाय प्रयास -

1. दल-बदल रोक विधेयक - भारत सरकार ने दल-बदल पर रोक लगाने के लिए दल-बदल विरोधी कानून बनाया है। 10 वी अनुसूची मे दल-बदल की संख्या मे आई तेजी को देखते हुए ऐसा किया गया है। इसके तहत यदि कोई नेता दल-बदल करता है तो उसे अपनी सीट भी गंवानी पड़ेगी। इस विधेयक से दल-बदल की संख्या मे कमी आई है किंतु अब पार्टी मे विरोध का स्वर उठाना और भी कठिन हो गया है।

२. अपनी संपति तथा आपराधिक मामलो का ब्यौरा देना अनिवार्य - भारत सरकार के आदेशानुसार प्रत्येक उम्मीदवार को अपनी संपति तथा अपने विरुद्ध लंबित आपराधिक मामलो का ब्यौरा देना अनिवार्य कर दिया है। इससे जनता को अपने उम्मीदवार के बारे मे अधिक जानकारी प्राप्त होती है और वे सही उम्मीदवार का चुनाव कर पाते है।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

३. आयकर रिटर्न भरना अनिवार्य – सका सरकार ने सभी दलो के लिए आयकर की रिटर्न भरना अनिवार्य कर दिया है। इससे दलो मे सुधार के प्रयत्न किये गये है।

५. दलो मे आंतरिक लोकतंत्र की स्थापना – सरकार ने दलो मे सुधार करने के लिए दलो मे नियमित रूप से संगठनात्मक चुनाव कराना अनिवार्य कर दिया है और दलो मे वंशवादी प्रवृत्ति को समाप्त करने का भी प्रयास किया गया है।

२१. औपचारिक तथा अनौपचारिक साखो मे से औपचारिक साख श्रेष्ठ है।

औपचारिक स्त्रोतो मे बैंक, सहकारी समितियो व स्वयं सहायता समूहो को शामिल किया जाता है। इनके द्वारा कम ब्याज दर पर ऋण प्रदान किया जाता है व कर्जदारो का शोषण नही किया जाता है। इनसे लिए गये ऋणो से कर्जदार अपने उद्योगो का विस्तार कर सकते है व लाभ अर्जित कर सकते है। ये स्रोत कर्जदार को अधिक संपन्न व समृद्ध कर देते है। वह कर्ज लेकर कोई नया कारोबार कर सकता है, कृषि कार्य कर सकता है या अन्य कोई उद्योग स्थापित कर सकता है। उद्योग करके लाभ मे से अपने ऋण का भुगतान कर सकता है। इस प्रकार उसकी संवृद्धि बढ़ती है और वह अधिक संपन्न हो जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जबकि अनौपचारिक स्रोतो मे साहूकार, महाजन, दोस्त, रिश्तेदार, आदि को शामिल किया जाता है। इनके द्वारा ऊँची ब्याज दर पर ऋण दिया जाता है व कर्जदारो का शोषण किया जाता है। इन स्रोतो से लिये ऋण से व्यक्ति को ऋण का बहुत अधिक भुगतान करना पड़ता है और वह कर्जजाल मे भी फंस सकता है और उसकी आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो जाती है।

अतः हम कह सकते है कि औपचारिक साख अनौपचारिक साख से बेहतर है।

३१. (क) लोकतांत्रिक शासन प्रणाली अन्य शासन प्रणालियो से बेहतर है क्योंकि -

1. यह व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाती है। लोकतांत्रिक शासन मे व्यक्ति की गरिमा को सिद्धांत रूप मे स्वीकार किया जाता है और जब किसी बात को सिद्धांत रूप में स्वीकार किया जाता है तो उसे अपनाना अधिक आसान हो जाता है। जबकि अन्य शासन प्रणालियो मे व्यक्ति की गरिमा न तो वैधानिक रूप से मान्य है और न ही सैद्धांतिक रूप से।

२. लोकतंत्र टकरावो को टालने व संभालने का तरीका उपलब्ध कराता है क्योंकि लोकतंत्र मे निर्णय काफी विचार-विमर्श के बाद किया जाता है। इससे गलती की संभावना कम हो जाती है

नामांक Roll No.

S–08–Social Science

माध्यमिक परीक्षा, 2016

SECONDARY EXAMINATION, 2016

SOCIAL SCIENCE

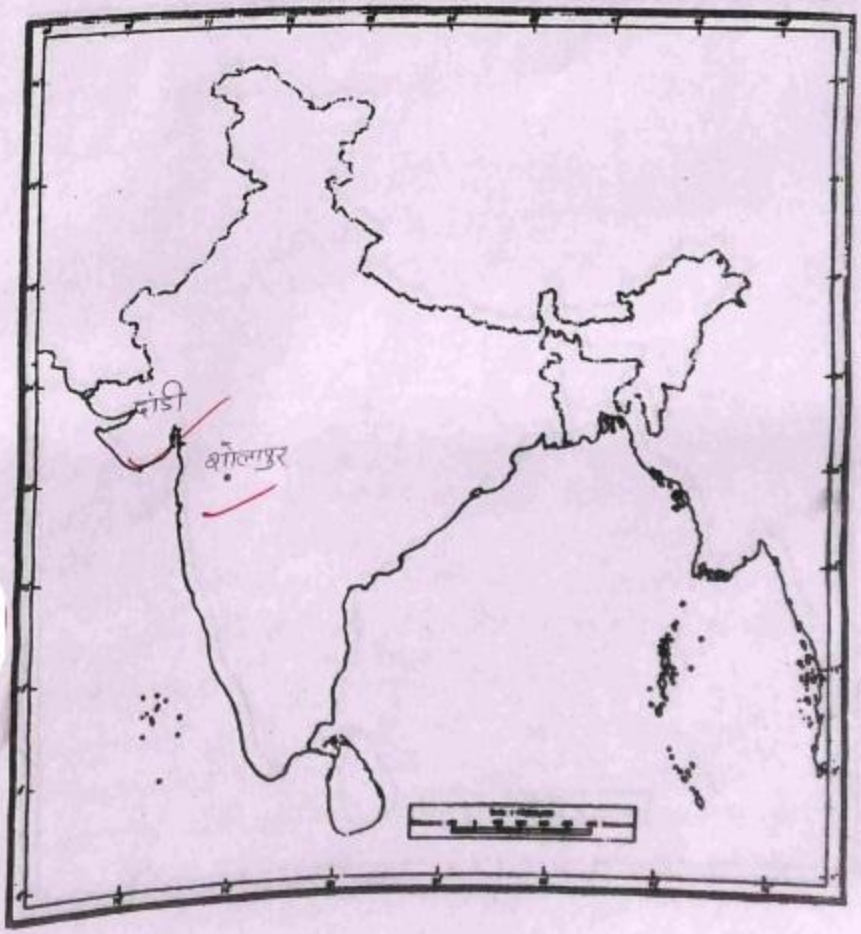

V-1004

नामांक Roll No.

S–08–Social Science

माध्यमिक परीक्षा, 2016

SECONDARY EXAMINATION, 2016

SOCIAL SCIENCE

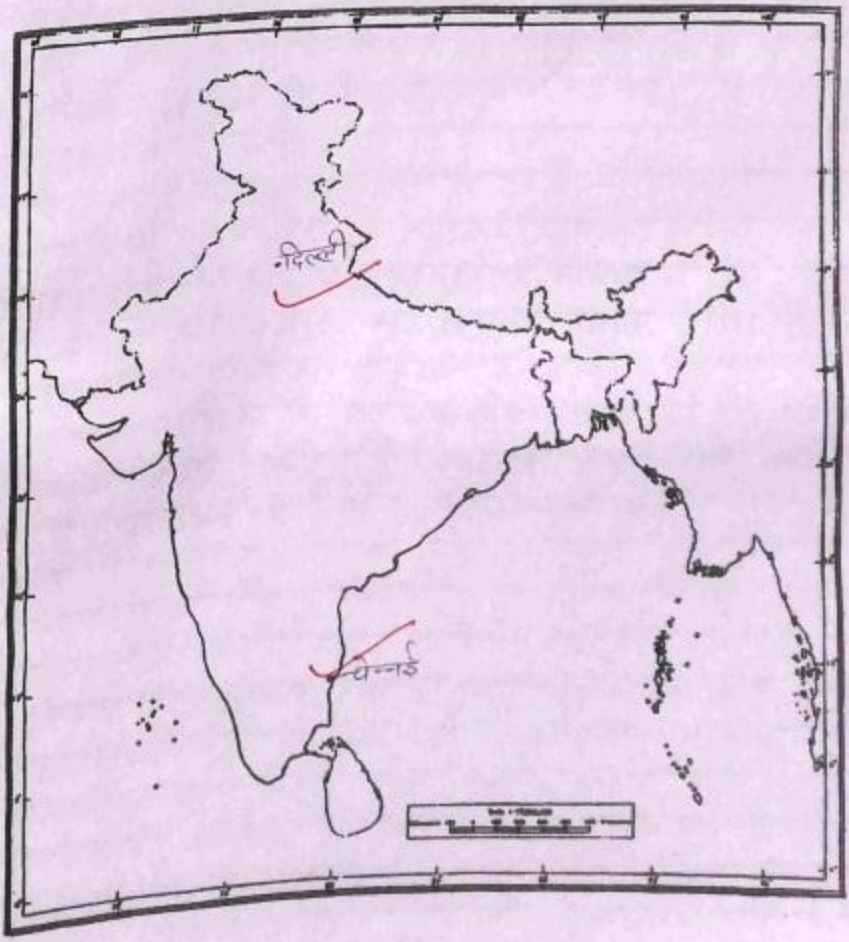

V-1004

3. लोकतंत्र मे व्यक्ति को सामाजिक, सांस्कृतिक स्वतंत्रता प्रदान की जाती है जबकि अन्य शासन प्रणालियो मे स्वतंत्रता प्रदान नही की जाती है।

4. लोकतंत्र मे निर्णय काफी विचार-विमर्श के बाद लिये जाते है। इससे गलती होने की संभावना कम हो जाती है जबकि अन्य शासन प्रणालियो मे निर्णय कोई एक व्यक्ति ही लेता है और किसी ओर से विचार-विमर्श नही करता है।

ख (i) सार्वजनिक यातायात का महत्व -

(i) इससे परिवहन मे लगने वाले समय को कम किया जा सकता है।

(ii) इसमे अधिक से अधिक लोग एक ही वाहन मे यात्रा कर सकते है। इससे ईंधन की बचत होती है व प्रदूषण भी कम होता है।

(iii) ऐसे सार्वजनिक स्थानो पर वृद्धजनो एवं विशेष योग्यजनो की सुविधा के लिए बनाया जाता है। इससे इन लोगो को आने-जाने मे सहूलियत रहती है और ये अपना कार्य बिना किसी की सहायता के स्वयं ही कर सकते है।

परीक्षक द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(iii)	सड़क दुर्घटना से व्यक्ति के जीने के अधिकार का उल्लंघन होता है क्योंकि सड़क दुर्घटना या सड़क हिंसा मे व्यक्ति अपनी जान भी गंवा सकता है इसलिए सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना अनिवार्य है।
	22	किसी भी देश की अर्थव्यवस्था मे प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रो का महत्वपूर्ण योगदान होता है और ये तीनों परस्पर निर्भर होते है। प्राथमिक क्षेत्रो मे कच्चे पदार्थो का निर्माण किया जाता है। इन कच्चे मालो का प्रयोग करके द्वितीयक क्षेत्रक के जरिये अन्य तैयार विनिर्माण परिवर्तित किया जाता है और मालो मे करके मुद्रा अर्जित की जाती है। उसका निर्यात तृतीयक क्षेत्र अपनी विभिन्न सेवाओ जैसे - बीमा, बैंकिंग, परिवहन आदि की सहायता से इन मालो को अन्य स्थानो पर पहुंचाता है। बैंक के रूप मे इनकी बचत पूंजी को एकत्रित करता है और संचार के रूप मे जानकारी आदान-प्रदान मे सहायता करता है। तृतीयक क्षेत्र इन क्षेत्रो के मालो का निर्यात करने मे अपनी आवश्यक सेवाएं प्रदान करता है। इस प्रकार प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रक परस्पर निर्भर होते है। इनमे से एक के बिना दूसरे का विकास नहीं हो सकता और प्रत्येक एक-दूसरे के लिए प्रेरक है।

समाप्त